

UPPCS PRE 24 MA ANSWER- 16

1. निम्नलिखित युग पर विचार कीजिए:

तमिल संगम - आयोजन स्थल

1. प्रथम संगम - मदुरै
2. दूसरा संगम - कपाटपुरम्
3. तीसरा संगम - काँचीपुरम्

उपर्युक्त में से कितने युग सुमेलित हैं?

- (a) एक
- (b) दो
- (c) तीन
- (d) उपर्युक्त कोई नहीं

1. उत्तर -(b)

तमिल किंवदंतियों के अनुसार, प्राचीन दक्षिण भारत में तीन संगमों (तमिल कवियों का समागम) का आयोजन किया गया था, जिसे 'मुच्चंगम' कहा जाता था।

- माना जाता है कि 'प्रथम संगम' मदुरै में आयोजित किया गया था। इस संगम में देवता और महान संत शामिल थे। इस संगम का कोई साहित्यिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।
- 'दूसरा संगम' कपाटपुरम् में आयोजित किया गया था, इस संगम का एकमात्र तमिल व्याकरण ग्रंथ 'तोलकाप्पियम्' ही उपलब्ध है।
- 'तीसरा संगम' भी मदुरै में हुआ था। इस संगम के अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए थे। इनमें से कुछ सामग्री समूह ग्रंथों या महाकाव्यों के रूप में उपलब्ध है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- दक्षिण भारत (कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र) में लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अवधि को 'संगम काल' के नाम से जाना जाता है।
- 'संगम' तमिल कवियों का एक संगम या सम्मलेन था।
- आठवीं सदी ई. में तीन संगमों का वर्णन मिलता है। पाण्ड्य राजाओं द्वारा इन संगमों को शाही संरक्षण प्रदान किया गया।
- ये साहित्यिक रचनाएँ द्रविड़ साहित्य के शुरुआती नमूने थे।

2. 'तोलकाप्पियम्' ग्रन्थ के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसके लेखक 'तोलकाप्पियर' हैं।
2. यह 'प्रथम संगम' का उपलब्ध एकमात्र प्राचीनतम ग्रंथ है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) न तो 1, न ही 2
- (c) केवल 2
- (d) 1 और 2 दोनों

2. उत्तर -(a)

- तोलकाप्पियम् (तमिल भाषा में) के लेखक 'तोलकाप्पियर' हैं। यह 'द्वितीय संगम' का उपलब्ध एकमात्र प्राचीनतम ग्रंथ है। यह व्याकरण से संबंधित एक ग्रंथ है, साथ ही यह उस समय की राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की जानकारी भी प्रदान करता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- पत्तुप्पातु (दशमीत) दस कविताओं का संग्रह है और यह 'तृतीय संगम' का दूसरा संग्रह ग्रंथ है।

¹ ये दस कविताएँ निम्नलिखित हैं-

- तिरुमुरुकात्रुप्पदै
- नेडनलवाडै

	<ul style="list-style-type: none"> • पेरुम्पनवृप्पदै • पत्तिनप्पालै • पोरुनरावृप्पदै • मदुरैकांचि • सिरुपानावृप्पदै • मुल्लैप्पातु • कुरुन्जिप्पातु • मलैपदुकदाम 										
<p>3. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिये:</p> <table border="1" data-bbox="142 506 599 909"> <thead> <tr> <th>सूची I</th><th>सूची II</th></tr> </thead> <tbody> <tr> <td>A. शिलप्पादिकारम्</td><td>1. तोलकाप्पियर</td></tr> <tr> <td>B. मणिमेखलै</td><td>2. सीतलैसत्तनार</td></tr> <tr> <td>C. तोलकाप्पियम्</td><td>3. तिरुवल्लुवर</td></tr> <tr> <td>D. तिरुक्कुरल</td><td>4. इलांगोआदिगल</td></tr> </tbody> </table> <p>नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:</p> <p>(a) A-4, B-1, C-2, D-3</p> <p>(b) A-3, B-2, C-1, D-4</p> <p>(c) A-3, B-1, C-2, D-4</p> <p>(d) A-4, B-2, C-1, D-3</p>	सूची I	सूची II	A. शिलप्पादिकारम्	1. तोलकाप्पियर	B. मणिमेखलै	2. सीतलैसत्तनार	C. तोलकाप्पियम्	3. तिरुवल्लुवर	D. तिरुक्कुरल	4. इलांगोआदिगल	<p>3. उत्तर -(d)</p> <ul style="list-style-type: none"> • शिलप्पादिकारम् 'इलांगोआदिगल' द्वारा और मणिमेखलै 'सीतलैसत्तनार' द्वारा लिखे गए महाकाव्य हैं। इन महाकाव्यों द्वारा तत्कालीन संगम समाज और राजनीति के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। • तोलकाप्पियम् के लेखक 'तोलकाप्पियर' हैं। • तिरुक्कुरल ग्रन्थ, महान कवि और दार्शनिक 'तिरुवल्लुवर' द्वारा लिखित है। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'पदिनेकिल्लकणक्कु' 18 कविताओं वाला एक आचारमूलक ग्रंथ है तथा यह तृतीय संगम साहित्य से संबंधित है। इन 18 कविताओं में महत्वपूर्ण कविता तमिल के महान कवि और दार्शनिक 'तिरुवल्लुवर' द्वारा लिखित 'तिरुक्कुरल' है। इसे तमिल साहित्य का बाइबिल अथवा पंचम वेद भी माना जाता है।
सूची I	सूची II										
A. शिलप्पादिकारम्	1. तोलकाप्पियर										
B. मणिमेखलै	2. सीतलैसत्तनार										
C. तोलकाप्पियम्	3. तिरुवल्लुवर										
D. तिरुक्कुरल	4. इलांगोआदिगल										
<p>4. कपिलार (काबिलर) के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. ये संगम काल के सबसे विपुल तमिल कवि थे। 2. उन्हें 'वेल पारि' नामक चेर राजा ने संरक्षण दिया था। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 2</p> <p>(b) न तो 1, न ही 2</p> <p>(c) 1 और 2 दोनों</p> <p>(d) केवल 1</p>	<p>4. उत्तर -(c)</p> <p>कपिलार या काबिलर</p> <ul style="list-style-type: none"> • ये संगम काल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ई.पू.) के सबसे विपुल तमिल कवि थे। • उन्हें 'वेल पारि' नामक चेर राजा ने संरक्षण दिया था। • कपिलर ने 'कलिथौके' और 'कुरिंजपातु' नामक ग्रंथ लिखे हैं। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'मामूलनार' नामक तमिल कवि ने नन्दों व मौर्यों का उल्लेख किया है। 										
<p>5. निम्नलिखित में से किस तमिल कृति को 'मणनूल' (विवाह ग्रंथ) भी कहा जाता है?</p> <p>(a) जीवक चिन्तामणि</p> <p>(b) कलिथौके</p> <p>(c) कुरिंजपातु</p>	<p>5. उत्तर -(a)</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'जीवक चिन्तामणि' एक तमिल महाकाव्य है। यह जैन मुनि 'तिरुतक्कदेवर' द्वारा रचित जैन धर्म ग्रन्थ है। इसके लेखक ने जैन मतानुसार गृहस्थ जीवन के स्वरूप को स्पष्ट किया है। इस ग्रंथ में मुख्य रूप से शृंगार रस का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ में आठ विवाहों का वर्णन किया गया है, इसलिए इसे 'मणनूल' (विवाह 										

<p>(d) नञ्चेलियर</p>	<p>ग्रंथ) भी कहा जाता है।</p> <ul style="list-style-type: none"> • नञ्चेलिविकनियर ने संगम कृतियों पर टीका लिखी है। • कपिलर ने 'कलिथौके' और 'कुरिंजपातु' नामक ग्रंथ लिखे। • ओवैयार तथा नञ्चेलियर संगम काल की दो प्रसिद्ध कवयित्री थीं। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> • मेगस्थनीज 'स्ट्रैबो' प्लिनी' और टॉलेमी जैसे यूनानी लेखकों ने पश्चिम तथा दक्षिण भारत के बीच वाणिज्यिक व्यापार संपर्कों के बारे में उल्लेख किया है। • अशोक के अभिलेखों में चोल, पाण्ड्य और चेर के बारे में बताया गया है। • कलिंग के शासक 'खारवेल' के हाथीगुम्फा शिलालेख में तमिल राज्यों का उल्लेख है। • आठवीं सदी ई. में इरैयनार अगप्पोरुल के भाष्य की भूमिका में तीनों संगमों का वर्णन किया गया है।
<p>6. चेर (संगम कालीन) के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. इन्होंने आधुनिक राज्य केरल के मध्य और उत्तरी हिस्सों तथा तमिलनाडु के कोंगु क्षेत्र को नियंत्रित किया था। 2. उनकी राजधानी 'टोंडी' थी। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 2</p> <p>(b) न तो 1, न ही 2</p> <p>(c) केवल 1</p> <p>(d) 1 और 2 दोनों</p>	<p>6. उत्तर -(c)</p> <p>चेर (संगम कालीन)</p> <ul style="list-style-type: none"> • चेरों ने आधुनिक राज्य केरल के मध्य और उत्तरी हिस्सों तथा तमिलनाडु के कोंगु क्षेत्र को नियंत्रित किया। • उनकी राजधानी 'वांजि' थी तथा पश्चिमी तट, मुसिरी और टोंडी के बंदरगाह उनके नियंत्रण में थे। • चेरों का प्रतीक चिह्न 'धनुष-बाण' था। • ईसा की पहली शताब्दी के 'पुगलुर शिलालेख' से चेर शासकों की तीन पीढ़ियों की जानकारी मिलती है। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <p>चेर (संगम कालीन)</p> <ul style="list-style-type: none"> • चेर राजा रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार से लाभ प्राप्त करते थे। कहा जाता है कि उन्होंने 'ऑगस्टस' का एक मंदिर भी बनवाया गया था। • चेरों के सबसे महान राजा शेनगुट्टवन/सेंगुत्तुवन थे जिन्हें लाल या अच्छे चेर भी कहा जाता था। • शेनगुट्टवन/सेंगुत्तुवन ने चेर राज्य में पत्तिनी (पत्नी) पूजा प्रारंभ की। इसे 'कण्णगी पूजा' भी कहा गया। • वह दक्षिण भारत से चीन में दूत भेजने वाले पहले व्यक्ति थे।
<p>7. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए:</p> <p>संगम कालीन राजवंश - प्रतीक</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. चोल - बाघ 2. पांड्य - मछली 3. चेर - धनुष <p>उपर्युक्त में से कौन-सा/से युग सुमेलित है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1 और 2</p>	<p>7. उत्तर -(b)</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'संगम युग' के प्रत्येक राजवंश के पास शाही प्रतीक था। जैसे - चोलों के लिये बाघ, पाण्ड्यों के लिये मछली और चेरों के लिये धनुष। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <p>चोल (संगम कालीन)</p> <ul style="list-style-type: none"> • चोलों ने तमिलनाडु के मध्य और उत्तरी भागों को नियंत्रित

<p>(b) 1, 2 और 3 (c) केवल 1 (d) केवल 2 और 3</p>	<p>किया।</p> <ul style="list-style-type: none"> • उनके शासन का मुख्य क्षेत्र कावेरी डेल्टा था, जिसे बाद में चोलमंडलम के नाम से जाना जाता था। • उनकी राजधानी उरैयूर (तिरुचिरापल्ली शहर के पास) थी। बाद में करिकाल ने कावेरीपत्तनम या पुहार नगर की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया। • इनका प्रतीक चिह्न बाघ था। • चोलों के पास एक कुशल नौसेना भी थी। • चोल राजाओं में राजा करिकाल सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था।
<p>8. पाण्ड्य (संगम कालीन) के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. यह राज्य भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भाग में था। 2. उन्होंने तमिल संगमों का संरक्षण किया और संगम कविताओं के संकलन की सुविधा प्रदान की। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 2 (b) केवल 1 (c) न तो 1, न ही 2 (d) 1 और 2 दोनों</p>	<p>8. उत्तर -(d) पाण्ड्य (संगम कालीन)</p> <ul style="list-style-type: none"> • पाण्ड्यों ने मदुरै से शासन किया था। • पाण्ड्य राज्य भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भाग में था। • कोरकई इनकी प्रारंभिक राजधानी थी जो बंगाल की खाड़ी के साथ 'थम्परपराणी' के संगम के पास स्थित थी। • पाण्ड्य वंश का प्रतीक चिह्न 'मछली' थी। • उन्होंने तमिल संगमों का संरक्षण किया और संगम कविताओं के संकलन की सुविधा प्रदान की। • इन शासकों ने एक नियमित सेना बनाए रखी। • संगम साहित्य के अनुसार, पाण्ड्य राज्य धनी और समृद्ध था। <p>अतिरिक्त ज्ञान: पाण्ड्य (संगम कालीन)</p> <ul style="list-style-type: none"> • पाण्ड्यों का पहला उल्लेख 'मेगास्थनीज' ने किया है, उन्होंने इस राज्य को मोतियों के लिये प्रसिद्ध बताया था। • इस राज्य में ब्राह्मणों का काफी प्रभाव था तथा ईसा के शुरूआती शताब्दियों में पाण्ड्य राजा वैदिक यज्ञ करते थे। • कलभ्रस (Kalabhras) नामक जनजाति के आक्रमण के साथ उनकी शक्ति का क्षय हुआ। • 'नल्लिवकोडन' संगम युग का अंतिम ज्ञात पाण्ड्य शासक था।
<p>9. संगम कालीन राजव्यवस्था और प्रशासन के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. इस दौरान 'वंशानुगत राजतंत्र' का प्रचलन था। 2. राज्य की आय का मुख्य स्रोत 'भूमि राजस्व' था। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1 (b) न तो 1, न ही 2 (c) केवल 2 (d) 1 और 2 दोनों</p>	<p>9. उत्तर -(d)</p> <ul style="list-style-type: none"> • संगम काल के दौरान 'वंशानुगत राजतंत्र' का प्रचलन था। तथा राज्य की आय का मुख्य स्रोत 'भूमि राजस्व' था, जबकि विदेशी व्यापार पर 'सीमा शुल्क' भी लगाया गया था। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <p>4</p> <ul style="list-style-type: none"> • संगम काल में राजा की शक्ति पर पाँच परिषदों का नियंत्रण था, जिन्हें 'पंचवारम्' अथवा पंच महासभा के नाम से जाना जाता था। • इनमें मंत्री (अमैच्चार), पुरोहित (पुरोहितार), दूत (दूतार),

	सेनापति (सेनापतियार) और गुप्तचर (ओरर) सम्मिलित थे।										
<p>10. 'संगम काल' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. इस काल के समाज में विभिन्न सामाजिक वर्गों का अस्तित्व था। 2. इस काल में दास प्रथा प्रचलित नहीं थी। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1 (b) 1 और 2 दोनों (c) न तो 1, न ही 2 (d) केवल 2</p>	<p>10. उत्तर -(a) संगम कालीन समाज</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'पुरुनानरु' नामक ग्रंथ में चार वर्गों तुड़ियन, पाइन, पडैयन और कडम्बन का उल्लेख मिलता है। • प्राचीन आदिम जनजातियाँ जैसे - थोडा, इरुला, नागा और वेदर इस काल में पाई जाती थीं। • इस काल में दास प्रथा भी प्रचलित थी। दासों के लिए नियमित बाजार लगते थे। <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u> संगम कालीन राजव्यवस्था और प्रशासन</p> <ul style="list-style-type: none"> • संगम काल के दौरान 'वंशानुगत राजतंत्र' का प्रचलन था। • सैन्य प्रशासन का संचालन कुशलतापूर्वक किया गया जाता था और प्रत्येक शासक के साथ एक नियमित सेना जुड़ी हुई थी। • राज्य की आय का मुख्य स्रोत 'भूमि राजस्व' था, जबकि विदेशी व्यापार पर 'सीमा शुल्क' भी लगाया गया था। • युद्ध में लूटी गई संपत्ति को भी 'राजकोषीय आय' माना जाता था। • डकैती और तस्करी को रोकने के लिये सड़कों और राजमार्गों की उचित व्यवस्था को बनाए रखा गया था। 										
<p>11. सूची I (संगम कालीन भूमि के प्रकार) को सूची II (विशेषता) से सुमेलित कीजिये:</p> <table border="1"> <tr> <th>सूची I</th><th>सूची II</th></tr> <tr> <td>A. मरुदम</td><td>1. पहाड़ी भूमि</td></tr> <tr> <td>B. पालै</td><td>2. कृषि भूमि</td></tr> <tr> <td>C. नेथल</td><td>3. रेगिस्तानी भूमि</td></tr> <tr> <td>D. कुरिंचि</td><td>4. समुद्रवर्ती भूमि</td></tr> </table> <p>नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:</p> <p>(a) A-1, B-2, C-3, D-4 (b) A-2, B-3, C-4, D-1 (c) A-4, B-3, C-1, D-2 (d) A-3, B-4, C-2, D-1</p>	सूची I	सूची II	A. मरुदम	1. पहाड़ी भूमि	B. पालै	2. कृषि भूमि	C. नेथल	3. रेगिस्तानी भूमि	D. कुरिंचि	4. समुद्रवर्ती भूमि	<p>11. उत्तर -(b)</p> <ul style="list-style-type: none"> • संगम कविताओं में भूमि के पाँच मुख्य प्रकार पाए जाते हैं - मुल्लै (चारागाह), मरुदम (कृषि/मैदानी), पालै (रेगिस्तान), नेथल (समुद्रवर्ती) और कुरिंचि (पहाड़ी)। <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u> संगम कालीन समाज</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'पुरुनानरु' नामक ग्रंथ में चार वर्गों का उल्लेख मिलता है - शुड्डुम वर्ग (ब्राह्मण एवं बुद्धिजीवी वर्ग), अरसर वर्ग (शासक एवं योद्धा वर्ग), बेनिगर वर्ग (व्यापारी वर्ग) और वेल्लाल वर्ग (किसान वर्ग)।
सूची I	सूची II										
A. मरुदम	1. पहाड़ी भूमि										
B. पालै	2. कृषि भूमि										
C. नेथल	3. रेगिस्तानी भूमि										
D. कुरिंचि	4. समुद्रवर्ती भूमि										
12. 'संगम युग' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार	12. उत्तर -(a)										

कीजिए:

1. पुरुष और महिला दोनों लेखकों ने संगम साहित्य में योगदान दिया है।
2. इस काल में सती प्रथा के कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
(b) न तो 1, न ही 2
(c) केवल 2
(d) 1 और 2 दोनों

'संगम युग' के दौरान महिलाओं की स्थिति

- संगम युग के दौरान की महिलाओं की स्थिति को समझने के लिये संगम साहित्य में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है।
- इस काल में महिलाओं का सम्मान किया जाता था और उन्हें बौद्धिक गतिविधियों के संचालन की अनुमति थी। ओबैयार, नञ्जेलियर और काकईपाडिन्यार जैसी महिला कवयित्री थीं, जिन्होंने तमिल साहित्य में उत्कर्ष योगदान दिया।
- महिलाओं को अपने जीवन साथी चुनने की अनुमति थी लेकिन विधवाओं का जीवन दयनीय था।
- समाज में उच्च स्तर पर 'सती प्रथा' के प्रचलन का उल्लेख मिलता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- संगम काल के प्रमुख देवता 'मुरुगन' थे, जिन्हें 'तमिल भगवान' के रूप में जाना जाता है।
- दक्षिण भारत में मुरुगन की पूजा सबसे प्राचीन मानी जाती है और भगवान मुरुगन से संबंधित त्योहारों का संगम साहित्य में उल्लेख किया गया था।
- संगम काल के दौरान पूजे जाने वाले अन्य देवता मयोन (विष्णु), वंदन (इंद्र), कृष्ण, वरुण और कोरवई थे।
- संगम युग में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का भी प्रसार दिखाई पड़ता है।

13. 'संगम युग' की अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस काल में कृषि मुख्य व्यवसाय था और चावल सबसे आम फसल थी।
2. इस काल में व्यापार आंतरिक एवं विदेशी दोनों प्रकार का होता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
(b) 1 और 2 दोनों
(c) न तो 1, न ही 2
(d) केवल 1

13. उत्तर -(b)

संगम युग की अर्थव्यवस्था

- इस काल में कृषि मुख्य व्यवसाय था और चावल सबसे आम फसल थी।
- हस्तकला में बुनाई, धातु के काम और बढईगीरी, जहाज़ निर्माण और मोतियों, पत्थरों तथा हाथी दाँत का उपयोग करके आभूषण बनाना शामिल था।
- संगम युग की महत्वपूर्ण विशेषता इसका आंतरिक और बाहरी व्यापार था।
- सूती और रेशमी कपड़ों की कटाई एवं बुनाई में उच्च विशेषज्ञता प्राप्त थी। पश्चिमी देशों में विशेष रूप से 'उरियुर' में बुने हुए सूती कपड़ों की बहुत मांग थी।

अतिरिक्त ज्ञान:

- ऑगस्टस, टाइबेरियस और नीरो जैसे रोमन सम्राटों द्वारा जारी किये गए कई सोने और चाँदी के सिक्के तमिलनाडु के सभी हिस्सों में पाए गए हैं जो संगम काल में 'समृद्ध विदेशी व्यापार' का संकेत देते हैं।

14. संगम काल के दौरान निम्नलिखित में से कौन-सी आयातित वस्तु/वस्तुएँ थी/थीं?

1. हाथी दाँत के उत्पाद

6

14. उत्तर -(d)

- संगम युग के प्रमुख निर्यात में सूती कपड़े और मसाले जैसे - काली मिर्च, अदरक, इलायची, दालचीनी और हल्दी के साथ-

<p>2. काली मिर्च 3. चाँदी 4. मीठी शराब</p> <p>कूट: (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 1, 2 और 3 (c) केवल 1, 3 और 4 (d) केवल 3 और 4</p>	<p>साथ हाथी दाँत के उत्पाद, मोती और बहुमूल्य रत्न आदि प्रमुख थे।</p> <ul style="list-style-type: none"> व्यापारियों द्वारा आयातित वस्तुओं में घोड़ा, सोना, चाँदी और मीठी शराब आदि प्रमुख थे। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम काल में 'पुहार' शहर विदेशी व्यापार का एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया, क्योंकि कीमती सामान वाले बड़े जहाज़ इस बंदरगाह में प्रवेश करते थे। वाणिज्यिक गतिविधि के लिये अन्य महत्वपूर्ण बंदरगाह तोंडी, मुशिरी, कोरकई, अरिकमेडु और मरक्कानम थे।
<p>15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> संगम युग में शिक्षा देने के लिए मन्दिरों को चुना गया था। संगम युग में शिक्षक को 'पिल्लै' कहा जाता था। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 2 (b) न तो 1, न ही 2 (c) केवल 1 (d) 1 और 2 दोनों</p>	<p>15. उत्तर -(c)</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम युग में शिक्षा देने के लिए मन्दिरों को चुना गया था और शिक्षक को 'कणकट्टम' तथा शिक्षा पाने वाले 'पिल्लै' कहा जाता था। विद्यार्थी शिक्षा पूरी करने के बाद शिक्षकों को 'गुरु दक्षिणा' देते थे। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> शिक्षा और साहित्य की दृष्टि से संगम युग 'स्वर्णिम काल' कहा जाता है। इस समय समाज में शिक्षा का न केवल प्रचलन था बल्कि ज्ञान जगत के सभी विषय जैसे विज्ञान, कला, साहित्य, व्याकरण, गणित और ज्योतिष, चित्रकला और मूर्तिकला आदि का समुचित ज्ञान दिया जाता था।
<p>16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> संगम काल में भूमि मापन की इकाई 'वैली' एवं 'माहोती' थी। संगम काल में 'अंबानम' अनाज का माप था। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 2 (b) 1 और 2 दोनों (c) न तो 1, न ही 2 (d) केवल 1</p>	<p>16. उत्तर -(b)</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम काल में भूमि मापन की इकाई 'वैली' एवं 'माहोती' थी। अंबानम, अनाज का माप था। नाली, अल्लाकू और उल्लाक भी छोटे माप थे। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम काल में अधिकांश व्यापार 'वस्तु-विनिमय' में होता था एवं बाजार को 'अवनम' कहते थे।
<p>17. संगम काल में खेतों में काम करने वाले मजदूरों को कहते थे -</p> <p>(a) वैल्लाल (b) आरशु (c) कविदी (d) कडैसियार</p>	<p>17. उत्तर -(d)</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम कालीन चोल राज्य में धनी कृषकों को 'वेल' तथा 'आरशु' की उपाधि दी जाती थी। पाण्ड्य राज्य में इन्हें 'कविदी' की उपाधि दी जाती थी। खेतों में काम करने वाले मजदूरों को 'कडैसियार' कहते थे। संगम युग में साधारण हल चलाने वाले को 'उझावर' के नाम से जाना जाता था।

	<p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम काल में भूमि अधिकतर 'वैल्लाल जाति' के हाथों में थी जो धनी कृषक वर्ग था। शासक वर्ग भी 'वैल्लाल जाति' से ही निकलता था। वैल्लाल के प्रमुख को 'वेलिर' कहा जाता था।
<p>18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> संगम काल में राजा के सर्वोच्च न्यायालय या राज्यसभा को 'मनरम' कहते थे। संगम काल में सेना के सेनापति को 'नलबै' की उपाधि दी जाती थी। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) 1 और 2 दोनों (b) केवल 2 (c) न तो 1, न ही 2 (d) केवल 1</p>	<p>18. उत्तर -(d)</p> <ul style="list-style-type: none"> संगम काल में राजा के सर्वोच्च न्यायालय या राज्यसभा को 'मनरम' कहते थे। राजा का जन्मदिन 'पेरूनल' कहलाता था। राजा के दरबार को 'नलबै' भी कहा जाता था। सेना के सेनापति को 'एनाडी' की उपाधि दी जाती थी। सेना कि अग्र टुकड़ी को तुशी तथा पिछली टुकड़ी को 'कुले' कहा जाता था। सेना में वैल्लाल (धनी कृषक) भर्ती किए जाते थे। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> संगमकालीन प्रशासन राजतंत्रात्मक था। राजपद वंशानुगत था। राज्य को 'मंडल' कहा जाता था। समस्त अधिकार राजा में निहित थे। राजा को मन्म, वन्दन, कारवेन इत्यादि उपाधियाँ दी गई थीं। ये उपाधियाँ राजा एवं देवता दोनों के लिए होती थीं।
<p>19. निम्नलिखित युग्म पर विचार कीजिए:</p> <p>तमिल संगम - अध्यक्ष</p> <ol style="list-style-type: none"> प्रथम संगम - अगस्त्य ऋषि दूसरा संगम - नङ्कीरर तीसरा संगम - सीतलैसत्तनार <p>उपर्युक्त में से कितने युग्म सुमेलित हैं?</p> <p>(a) एक (b) दो (c) तीन (d) उपर्युक्त कोई नहीं</p>	<p>19. उत्तर -(a)</p> <ul style="list-style-type: none"> प्रथम संगम का आयोजन पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी मदुरै में हुआ था। इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की। अगस्त्य ऋषि को ही दक्षिण में आर्य सभ्यता के प्रचार का श्रेय प्रदान किया जाता है। दूसरा संगम 'कपाटपुरम्' में आयोजित किया गया। इस संगम की अध्यक्षता भी ऋषि अगस्त्य ने की। बाद में उनका स्थान उनके शिष्य तोलकाप्पियर ने लिया। इस संगम द्वारा संकलित ग्रंथों में एकमात्र 'तोलकाप्पियम' ही अवशिष्ट है। तृतीय संगम उत्तरी मदुरै में आयोजित किया गया। इस सभा की अध्यक्षता 'नङ्कीरर' ने की थी। <p>अतिरिक्त ज्ञान:</p> <ul style="list-style-type: none"> 'शिलप्पदिकरम' से संगम कालीन सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, प्रमुखतया विदेशी व्यापार पर प्रकाश पड़ता है। इसके रचयिता 'इलांगोआदिल' थे। कथा का नायक कोवलन, नायिका कन्नगी एवं उपनायिका राजनर्तकी 'माधवी' है। 'मणिमेखले' से भी सामाजिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इसकी रचना 'सीतलै सत्तनार' ने की। इस महाकाव्य की नायिका कोवलन और माधवी की पुत्री 'मणिमेखलै' है।

20. 'जीवक चिन्तामणि' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह 'तिरुतक्कदेवर' द्वारा रचित बौद्ध धर्मग्रन्थ है।
2. यह संस्कृत भाषा में है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
- (b) 1 और 2 दोनों
- (c) न तो 1, न ही 2
- (d) केवल 1

20. उत्तर -(c)

- 'जीवक चिन्तामणि' एक तमिल महाकाव्य है। यह जैन मुनि 'तिरुतक्कदेवर' द्वारा रचित जैन धर्मग्रन्थ है। इस ग्रंथ को तमिल साहित्य के 5 प्रसिद्ध ग्रंथों में गिना जाता है।
- 13 खण्डों में विभाजित इस ग्रंथ में कुल 3,145 पद हैं। इसमें कवि ने 'जीवक' नामक राजकुमार का जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है।
- इसमें जन्म से मोक्ष तक आत्मा की यात्रा का सुंदर वर्णन किया गया है।

अतिरिक्त ज्ञान:

संगम कालीन प्रशासनिक ईकाई

- राज्य - मंडलम
- प्रांत - नाडू
- शहर - उर
- बड़े गांव - पेरुर
- छोटे गांव - शिरूर
- पुराने गांव - मुदूर
- स्थानीय सभा - मनरम

21. संगम काल के सन्दर्भ में 'कासु', 'कनम', 'पोन', 'वेनपोन' आदि थे -

- (a) सिक्के
- (b) भूमि मापन में माप
- (c) आभूषण
- (d) अनाज मापन के माप

21. उत्तर -(a)

- संगम काल में सिक्कों के लिये 'कासु', 'कनम', 'पोन', 'वेनपोन' आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

अतिरिक्त ज्ञान:

- संगम साहित्य में किसी महिला शासिका का उल्लेख नहीं मिलता है।
- संगम कालीन प्रशासनिक व्यवस्था में पूरा साम्राज्य 'मंडलम' कहलाता था।

22. 'सातवाहन वंश' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसने उत्तरी भारत पर शासन करना आरंभ किया था।
2. शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य के पतनकाल में 'तक्षशिला' को राजधानी बनाकर इस वंश ने अपनी शक्ति का उत्कर्ष प्रारंभ किया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
- (b) न तो 1, न ही 2
- (c) केवल 1
- (d) 1 और 2 दोनों

22. उत्तर -(b)

आंध्र-सातवाहन राजवंश

- 'सातवाहन वंश' भारत का प्राचीन राजवंश था, जिसने केंद्रीय दक्षिण भारत पर शासन करना आरंभ किया था।
- शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य के पतनकाल में प्रतिष्ठान् (गोदावरी नदी के तट पर स्थित पैठन) को राजधानी बनाकर 'सातवाहन वंश' ने अपनी शक्ति का उत्कर्ष प्रारंभ किया था।

अतिरिक्त ज्ञान:

- दक्षिणापथ के सातवाहन राजाओं के संबंध में साहित्यिक और पुरातात्विक दोनों स्रोतों से महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। साहित्यिक स्रोतों में 'पुराण' महत्वपूर्ण हैं जिनमें इस राजवंश के तीस राजाओं के नाम मिलते हैं। पुराणों से पता चलता है कि आंध्रजातीय सिमुक (सिंधुक) ने अंतिम कण्व शासक की हत्या कर और शुंगों की अवशिष्ट शक्ति का

	<p>विनाश कर सातवाहन वंश की स्थापना की थी।</p> <ul style="list-style-type: none"> सातवाहनकालीन लेखों में गौतमीबलश्री का नासिक गुहालेख, वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी का कार्ले गुहालेख और यज्ञश्री सातकर्णि का 'नासिक गुहालेख' भी ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं।
<p>23. 'कण्व वंश' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> ये शुंगों के उत्तराधिकारी थे। 'सातवाहन वंश' ने इस वंश को समाप्त किया था। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) 1 और 2 दोनों (b) न तो 1, न ही 2 (c) केवल 2 (d) केवल 1</p>	<p>23. उत्तर -(a)</p> <p>कण्व वंश (75 ई.पू.-30 ई.पू.)</p> <ul style="list-style-type: none"> शुंग वंश के अंतिम शासक 'देवभूति' की हत्या करके उसके अधिकारी 'वासुदेव' ने कण्व वंश की नींव डाली थी। 'सातवाहन वंश' ने इस वंश को समाप्त किया था। कण्ववंशी शासक शुंगों के उत्तराधिकारी थे। वासुदेव ब्राह्मण था, जो अंतिम शुंग शासक 'देवभूति' का मंत्री था। <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u></p> <ul style="list-style-type: none"> मौर्य सम्राट 'अशोक' द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप ह्रास को प्राप्त हुए हिन्दू धर्म का 'पुष्यमित्र शुंग' ने पुनरुत्थान किया। 'शुंग काल' में ही भागवत धर्म का उदय और विकास हुआ तथा वासुदेव, विष्णु की उपासना प्रारंभ हुई। शुंग वंश के अंतिम शासक 'देवभूति' की हत्या उसके मंत्री 'वासुदेव' ने 75 ई.पू. में करके 'कण्व राजवंश' की नींव डाली थी। पुष्यमित्र शुंग के राज्यपाल 'धनदेव' के अयोध्या अभिलेख से ज्ञात होता है कि पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किये थे। इन यज्ञों को कराने का श्रेय 'पतंजलि' को है।
<p>24. निम्नलिखित कण्ववंशी शासकों को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये?</p> <ol style="list-style-type: none"> नारायण कण्व सुशर्मा कण्व वासुदेव कण्व भूमिमित्र कण्व <p>कूट:</p> <p>(a) 2 - 1 - 4 - 3 (b) 3 - 1 - 4 - 2 (c) 2 - 4 - 1 - 3 (d) 3 - 4 - 1 - 2</p>	<p>24. उत्तर -(d)</p> <p>शासक - शासन अवधि (ई.पू.)</p> <ul style="list-style-type: none"> वासुदेव कण्व - 73-66 भूमिमित्र कण्व - 66-52 नारायण कण्व - 52-40 सुशर्मा कण्व - 40-28 <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u></p> <p>कण्व राजवंश (73 ई. पू.-28 ई. पू.)</p> <ul style="list-style-type: none"> कण्व वंश या 'काण्व वंश' या 'काण्वायन वंश' शुंग वंश के बाद मगध का शासन करने वाला वंश था। इस वंश की स्थापना वासुदेव के द्वारा की गयी थी। कण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मा को लगभग 28 ई. पू. में आंध्र वंश के संस्थापक 'सिमुक' ने मार डाला और इसके साथ

	<p>ही कण्व वंश का अंत हो गया था।</p>
<p>25. निम्नलिखित में से कौन-सा/से प्राचीन भारत से सम्बन्धित विदेशी राजवंश था/थे?</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. सातवाहन वंश 2. शक वंश 3. महामेघवाहन वंश 4. कुषाण वंश <p>कूट:</p> <p>(a) केवल 4</p> <p>(b) केवल 1, 3 और 4</p> <p>(c) केवल 2 और 4</p> <p>(d) केवल 2, 3 और 4</p>	<p>25. उत्तर -(c)</p> <p>मौयोत्तर काल के प्रमुख राजवंश</p> <p>भारतीय राजवंश</p> <ul style="list-style-type: none"> • शुंग वंश • कण्व वंश • सातवाहन वंश • चेदि वंश • महामेघवाहन वंश <p>विदेशी राजवंश</p> <ul style="list-style-type: none"> • इंडो-ग्रीक • शक • पार्थियन • कुषाण वंश <div> <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u></p> <p>सातवाहन वंश (60 ई.पू. से 240 ई.)</p> <ul style="list-style-type: none"> • यह भारत का प्राचीन राजवंश था, जिसने केन्द्रीय दक्षिण भारत पर शासन किया था। भारतीय इतिहास में यह राजवंश 'आन्ध्र वंश' के नाम से भी विख्यात है। सातवाहन वंश का संस्थापक 'सिमुक' था। पैठण (प्रतिष्ठानपुरम) उनकी राजधानी थी। • सिमुक को सिंधुक, शिशुक, शिप्रक तथा बृषल भी कहा जाता है। सिमुक के बाद उसका छोटा भाई 'कृष्ण' राजगद्दी पर बैठा था। • सातवाहन वंश के प्रमुख शासक सिमुक, शातकर्णी, गौतमी पुत्र शातकर्णी, वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी तथा यज्ञ श्री शातकर्णी आदि थे। </div>
<p>26. भारत पर आक्रमण के सन्दर्भ में निम्नलिखित को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये?</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. यूनानी 2. शक 3. कुषाण <p>कूट:</p> <p>(a) 1, 2, 3</p> <p>(b) 2, 3, 1</p> <p>(c) 2, 1, 3</p> <p>(d) 3, 2, 1</p>	<p>26. उत्तर -(a)</p> <ul style="list-style-type: none"> • भारत में बाह्य आक्रमणों के कालों का सही कालानुक्रम निम्न प्रकार है - यूनानी (326 ई.पू.सिकंदर महान), शक (सीथियन) (प्रथम शताब्दी ई.पू.), कुषाण (पहली शताब्दी ई.) <div> <p><u>अतिरिक्त ज्ञान:</u></p> <p>पल्लव वंश</p> <ul style="list-style-type: none"> • पार्थियन वंश के लोग पार्थिया के निवासी थे। पार्थिया, बैक्ट्रिया के पश्चिम की ओर कैस्पियन सागर के दक्षिण-पूर्व में स्थित सेल्युकसी साम्राज्य का सीमावर्ती प्रांत था। • पार्थियन वंश को भारत में पहलव तथा पल्लव वंशों के नाम से भी जाना जाता है। • तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य बैक्ट्रिया के साथ ही पार्थिया के यवन क्षत्रप ने भी अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। परंतु शीघ्र ही पूर्व की ओर से आने वाले कुछ व्यक्तियों ने </div>

यवन शासक की हत्या कर दी तथा उन्होंने जिस साम्राज्य की नींव डाली वह पार्थियन वंश नाम से विख्यात हुआ।

27. 'शातकर्णी प्रथम' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे कण्व वंश की शक्ति एवं सत्ता का मूल संस्थापक माना जाता है।
2. उसने अपने शासनकाल में अश्वमेध यज्ञ किया और समस्त दक्षिण भारत पर अपनी सार्वभौम सत्ता स्थापित की थी।
3. उसने गोदावरी तट पर स्थित 'प्रतिष्ठान नगर' को अपनी राजधानी बनाया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) 1, 2 और 3
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 2
(d) केवल 1 और 3

27. उत्तर -(b)

शातकर्णी प्रथम

- सातवाहन वंश का तीसरा शासक शातकर्णी प्रथम ही सातवाहन वंश की शक्ति एवं सत्ता का मूल संस्थापक माना जाता है।
- उसने अपने शासनकाल में अश्वमेध यज्ञ किया और समस्त दक्षिण भारत पर अपनी सार्वभौम सत्ता स्थापित की। उसने गोदावरी तट पर स्थित 'प्रतिष्ठान नगर' को अपनी राजधानी बनाया था।
- शातकर्णी प्रथम की मृत्यु के बाद शकों के आक्रमणों के फलस्वरूप सातवाहनों की शक्ति में कमी होने लगी और महाराष्ट्र में शक-क्षत्रप वंश का शासन आरंभ हुआ, परंतु सातवाहन वंश के 23वें शासक 'गौतमी पुत्र शातकर्णी' ने शक-क्षत्रप की शक्ति को नष्ट करके पुनः सातवाहन वंश की शक्ति, दक्षिण भारत में स्थापित की।

अतिरिक्त ज्ञान:

- 'नासिक प्रशस्ति' में 'गौतमीपुत्र सातकर्णी' को वेदों का आश्रय (आगमननिलय), अद्वितीय ब्राह्मण (एकब्रह्मन्) और द्विजों तथा द्विजेतर जातियों के कुलों का वर्धन करनेवाला (द्विजावरकुटुंबविवधन) कहा गया है। उसने नासिक के बौद्ध संघ को 'अजकालकिय' नामक क्षेत्र तथा कार्ले के भिक्षुसंघ को 'करजक' नामक गाँव दान दिया था। इन विवरणों से लगता है कि 'गौतमीपुत्र सातकर्णी' व्यक्तिगत रूप से वैदिक धर्म का पोषक था, किंतु उसके राज्य में बौद्धों जैसे 'श्रमण समुदाय' भी राज्य और प्रजा के बीच अत्यंत लोकप्रिय और सम्मानित थे।

28. 'गौतमी पुत्र शतकर्णी' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह सातवाहन वंश का महानतम राजा था।
2. इसकी सैनिक सफलताओं एवं अन्य कार्यों की जानकारी 'नासिक अभिलेख' से प्राप्त होती है।
3. इसे 'एका ब्राह्मण' एवं 'अद्वितीय ब्राह्मण' कहा गया है।
4. इसने शक शासक 'नहपान' को पराजित किया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

28. उत्तर -(d)

गौतमी पुत्र शतकर्णी

- गौतमी पुत्र शतकर्णी सातवाहन वंश का महानतम राजा था।
- इसकी सैनिक सफलताओं एवं अन्य कार्यों की जानकारी इसकी माता बल श्री के नासिक अभिलेख से प्राप्त होती है।
- नासिक अभिलेख में इसे 'एका ब्राह्मण' एवं 'अद्वितीय ब्राह्मण' कहा गया है।
- उसने 'खतियदपमानमदनस' की उपाधि धारण की। इसने शक शासक 'नहपान' को पराजित किया।
- नहपान को पराजित करने के पश्चात उसने नासिक के बौद्ध संघ

12

<p>(a) एक (b) दो (c) तीन (d) चार</p>	<p>को 'अजकालकिय' नामक क्षेत्र दान दिया। इसने नासिक जिले में वेणाकटक नामक शहर की स्थापना की।</p> <p>अतिरिक्त ज्ञान: यज्ञश्री शातकर्णी</p> <ul style="list-style-type: none"> सातवाहन वंश का अन्तिम महत्वपूर्ण शासक 'यज्ञश्री शातकर्णी' था। वह महान विजेता शासक था। उसने सिक्के पर नाव का चित्र अंकित करवाया। 'विजया शातकर्णी' इस वंश का अंतिम शासक था।
<p>29. 'वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> वह प्राचीन भारत के सातवाहन वंश का शासक था। उसने 'महाराज' और 'दक्षिणापथेश्वर' की उपाधि धारण की थी। <p>उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?</p> <p>(a) केवल 1 (b) न तो 1, न ही 2 (c) केवल 2 (d) 1 और 2 दोनों</p>	<p>29. उत्तर -(d) वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी</p> <ul style="list-style-type: none"> गौतमी पुत्र शातकर्णी के पश्चात वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावि शासक बना। पुराण में उसे 'प्रबोमा' भी कहा गया है। पुलुमावि के शासन काल में सातवाहन संघर्ष पुनः प्रारम्भ हो गया। रुद्रदामन के जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख ज्ञात होता है कि उसने दक्षिणापथपति शातकर्णी को दो बार हराया पुलुमावि ने महाक्षत्रप रुद्रदामन की पुत्री के साथ विवाह किया था। उसने प्रतिष्ठान को अपनी राजधानी बनाया। पुलुमावि ने 'महाराज' और 'दक्षिणापथेश्वर' की उपाधि धारण की थी। <p>अतिरिक्त ज्ञान: सातवाहन वंश के शासक</p> <ul style="list-style-type: none"> सिमुक कृष्ण शातकर्णी गौतमीपुत्र शातकर्णी वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी वाशिष्ठी पुत्र शातकर्णी शिवस्कंद शातकर्णी यज्ञश्री शातकर्णी विजय शातकर्णी
<p>30. 'आंध्र इक्ष्वाकु वंश' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> यह सातवाहनों के सामंत थे, जो कृष्णा गुटुर क्षेत्र में शासन करते थे। इस वंश के शासक जैन धर्म के पोषक थे। 'वीरपुरुषदत्त' इस वंश का संस्थापक था। <p>उपर्युक्त में से कितने कथन सही है/हैं?</p> <p>(a) एक (b) दो (c) तीन</p>	<p>30. उत्तर -(a) आंध्र इक्ष्वाकु वंश</p> <ul style="list-style-type: none"> यह सातवाहनों के सामंत थे, जो कृष्णा गुटुर क्षेत्र में शासन करते थे। क्योंकि इनकी राजधानी विजयपुरी (आधुनिक नागार्जुनकोंडा) में थी। अतः इस वंश को 'विजयपुरी इक्ष्वाकु' भी कहते हैं। विभिन्न स्रोतों के अनुसार कहा जा सकता है की विशिष्ठ पुत्र चंतामुला (Chamtamula – 210-250CE) इस वंश का संस्थापक था। उसने अश्वमेध और वाजपेय यज्ञ किये थे। इसके उत्तराधिकारी वीरपुरुषदत्त ने नागार्जुनकोंडा के प्रसिद्ध

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

स्तूप का निर्माण कराया था।

- आंध्र इक्ष्वाकु वंश के शासक बौद्ध धर्म के पोषक थे।

अतिरिक्त ज्ञान:

- कलिंग का 'चेदिवंशीय' शासक 'खारवेल' प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक था। उड़ीसा प्रान्त के भुवनेश्वर से तीन मील की दूरी पर स्थित उदयगिरि पहाड़ी की हाथीगुम्फा से उसका एक बिना तिथि का अभिलेख प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख खारवेल का इतिहास जानने का एकमात्र स्रोत है।

31. सूची I (राजवंश) को सूची II (संस्थापक) से सुमेलित कीजिये:

सूची I	सूची II
A. शुंग वंश	1. महामोघवाहन
B. काण्वायन वंश	2. सिमुक
C. सातवाहन वंश	3. वासुदेव
D. चेदि वंश	4. पुष्यमित्र

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

- (a) A-2, B-3, C-4, D-1
(b) A-2, B-1, C-4, D-3
(c) A-4, B-3, C-2, D-1
(d) A-1, B-2, C-4, D-3

उत्तर -(c)

भारत के प्रमुख राजवंश और उनके संस्थापक

राजवंश - संस्थापक

- शुंग वंश - पुष्यमित्र
- कण्व, काण्व, काण्वायन वंश - वासुदेव
- सातवाहन वंश - सिमुक
- चेदि वंश - महामोघवाहन

अतिरिक्त ज्ञान:

चेदि वंश

- इस वंश का महानतम शासक 'खारवेल' था। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से पता चलता है कि चेदि वंश का संस्थापक 'महामोघवाहन' था।
- अभिलेखों में खारवेल को 'राजर्षी' कहा गया है।

32. निम्नलिखित युगों पर विचार कीजिए:

वंश - संस्थापक

1. हिंद-यवन - डेमेट्रियस
2. कुषाण वंश - मीनान्दर
3. कदंब वंश - मयूरशर्मन
4. गंग वंश - कोंकणिवर्मा

उपर्युक्त में से कितने युग सुमेलित है?

- (a) एक युग
(b) दो युग
(c) तीन युग
(d) चार युग

32. उत्तर -(c)

भारत के प्रमुख राजवंश और उनके संस्थापक तथा राजधानी

- वंश - संस्थापक - राजधानी
- हिंद-यवन - डेमेट्रियस - शाकल (सियालकोट)
- कुषाण वंश - कुजुल कडफिसेस - पुरुषपुर (पेशावर)
- कदंब वंश - मयूरशर्मन - बनवासी
- गंग वंश - कोंकणिवर्मा - तलकाड

अतिरिक्त ज्ञान:

- सबसे प्रसिद्ध हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक) वंश का शासक मीनान्दर (160-120 ई. पू.) था जो बौद्ध साहित्य में 'मिलिन्द' के नाम से प्रसिद्ध है। यह सम्भवतः डेमेट्रियस के कुल का था।
- स्वात की घाटी में एक मंजूषा मिली है जिस पर मीनान्दर का नाम खुदा है। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि मीनान्दर के राज्य में अफ़ग़ानिस्तान का कुछ भाग और उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रदेश सम्मिलित थे।

33. नीचे दो वक्तव्य दिए गए हैं, एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है।

कथन (A): प्राचीन भारत में 'सातवाहन शासकों' ने ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि प्रदान करने की प्रथा प्रारंभ की थी।

कारण (R): महाराष्ट्र के 'नानाघाट अभिलेख' में भूमिदान का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण मिलता है।

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

- (a) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
(b) (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।
(d) (A) तथा (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

33. उत्तर -(b)

- प्राचीन भारत में 'सातवाहन शासकों' ने ब्राह्मणों एवं बौद्ध भिक्षुओं को पहली शताब्दी ई.पू. में कर-मुक्त भूमि प्रदान करने की प्रथा प्रारंभ की थी क्योंकि महाराष्ट्र के 'नानाघाट अभिलेख' में भूमिदान का प्रथम अभिलेखीय प्रमाण मिलता है जो सातवाहन शासकों से सम्बंधित है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- 'सातवाहन काल' के पदाधिकारियों में भांडागारिक (कोषाध्यक्ष), रज्जुक (राजस्व विभाग का प्रमुख), पनियघरक (जलापूर्ति अधिकारी), कर्मान्तिक (भवन निर्माण अधिकारी), सेनापति आदि होते थे।

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 'कुषाण वंश' के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी के लिये हमें मुख्यतः चीनी स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- कुषाण शासकों ने ही सर्वप्रथम भारत में स्वर्ण सिक्के प्रचलित करवाये थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
(b) 1 और 2 दोनों
(c) न तो 1, न ही 2
(d) केवल 1

34. उत्तर -(b)

- 'कुषाण वंश' के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी के लिये हमें मुख्यतः चीनी स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है।
- चीनी ग्रंथों में पान-कु कृत 'सिएन-हान-शू' तथा फान-ए कृत 'हाऊ-हान-शू' महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- इन विवरणों से पता चलता है, कि यू-ची कबीला कुई-शुआंग (कुषाण) सबसे शक्तिशाली था, कुषाण शासकों ने ही सर्वप्रथम भारत में स्वर्ण सिक्के प्रचलित करवाये थे। चीनी स्रोतों तथा सिक्कों से कडफिसेस राजाओं की विजयों तथा राज्य – विस्तार की सूचना मिलती है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- तक्षशिला की खुदाई 1915 ईस्वी में सर जॉन मार्शल द्वारा करवायी गयी थी। यहाँ से कुषाणकालीन सिक्के तथा स्मारक मिलते हैं। इन्हीं के आधार पर यह निश्चित करने में सहायता मिली कि 'कनिष्क कुल' ने 'कडफिसेस कुल' के बाद शासन किया था।

35. 'विम कडफिसस' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- वह 'कुजुल कडफिसस' का उत्तराधिकारी था।
- उसके सिक्कों से यह ज्ञात होता है कि वह शैव मत का अनुयायी था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) 1 और 2 दोनों
(b) न तो 1, न ही 2
(c) केवल 2

35. उत्तर -(a)

विम कडफिसस

- 'कुजुल कडफिसस' की 78 ई. में मृत्यु हो गई और इसके बाद उसका पुत्र 'विम कडफिसस' शासक बना।
- 'विम कडफिसस' ने पंजाब, सिंध, कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश के कुछ भाग को कुषाण राज्य के अन्तर्गत ला दिया। कुछ इतिहासकारों का ऐसा मानना है कि उसने कुषाण साम्राज्य को पूर्व में बनारस तक तथा दक्षिण में नर्मदा नदी तक विस्तारित कर दिया था।
- विम कडफिसस ने 'देवपुत्र' तथा 'सम्राटों का सम्राट' की उपाधि

<p>(d) केवल 1</p>	<p>ली। उसके सिक्कों से यह ज्ञात होता है कि वह शैव मत का अनुयायी था और उसने 78 ई. से 110 ई. तक शासन किया।</p> <p>अतिरिक्त ज्ञान: कुजुल कडफिसस</p> <ul style="list-style-type: none"> • भारत में कुषाणवंश का पहला विख्यात शासक कुजुल कडफिसस था। • कुजुल कडफिसस 45 ई. से लेकर 78 ई. तक शासन किया। उसके राज्य में काबुल, गांधार, बैक्ट्रिया, बलूचिस्तान आदि प्रदेश सम्मिलित थे। • वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
<p>36. 'कनिष्क' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. वह 'शक वंश' का महानतम शासक था। 2. इसके साम्राज्य में अफगानिस्तान, सिंध, बैक्ट्रिया तथा पार्थिया के क्षेत्र सम्मिलित थे। 3. इसी ने 78 ई0 में 'शक संवत्' आरम्भ किया था। 4. उसने कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। <p>उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?</p> <p>(a) चार (b) तीन (c) दो (d) एक</p>	<p>36. उत्तर -(b) कनिष्क</p> <ul style="list-style-type: none"> • कनिष्क 'कुषाण वंश' का महानतम शासक था। इसके कार्यकाल का आरम्भ 78 ई0 माना जाता है। क्योंकि इसी ने 78 ई0 में 'शक संवत्' आरम्भ किया था। • इसके साम्राज्य में अफगानिस्तान, सिंध, बैक्ट्रिया तथा पार्थिया के क्षेत्र सम्मिलित थे। • कनिष्क ने भारत में अपना साम्राज्य विस्तार मगध तक किया तथा यहीं से वह प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर ले गया। उसने कश्मीर को विजित कर वहाँ 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया था। • कनिष्क के उत्तराधिकारी हुविष्क (106 ई.-138ई.) के समय में कुषाण सत्ता का प्रमुख केन्द्र पेशावर से हटकर मथुरा पहुंच गया था। कनिष्क के कुल का अंतिम महान शासक 'वासुदेव' था। • कनिष्क को 'द्वितीय अशोक' भी कहा जाता है। वह बौद्ध धर्म की महायान शाखा का संरक्षक था। उसने कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। <p>अतिरिक्त ज्ञान: शक संवत्</p> <ul style="list-style-type: none"> • यह भारत के अधिकारिक कैलेंडर है। इसको सरकारी रूप से अपनाने के पीछे कारण यह है कि, प्राचीन लेखों, शिला लेखों में इसका वर्णन देखा गया है। इसके अतिरिक्त यह संवत् 'विक्रम संवत्' के बाद शुरू हुआ। यह अंग्रेजी कैलेंडर से 78 वर्ष पीछे है। • कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था। उसने 78 ई. में अपना राज्यारोहण किया तथा इसके उपलक्ष्य में 'शक संवत्' चलाया। • इसे वर्तमान में भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। यह चैत्र (22 मार्च अथवा 21 मार्च) से प्रारंभ होता है।
<p>37. निम्नलिखित में से किसे कुषाण शासक 'कनिष्क' का</p>	<p>37. उत्तर -(a)</p>

संरक्षण प्राप्त था -

1. अश्वघोष
2. नागार्जुन
3. वसुमित्र
4. चरक

कूट:

- (a) 1, 2, 3 और 4
(b) केवल 1 और 3
(c) केवल 1, 3 और 4
(d) केवल 2 और 4

कनिष्क के दरबार में संरक्षण प्राप्त विद्वान
अश्वघोष

- वह चतुर्थ बौद्ध संगीति का उपाध्यक्ष तथा उज्जकोटि का साहित्यकार था।
- 'बुद्धचरित' तथा 'सूत्रालंकार' उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

नागार्जुन

- वह दार्शनिक व वैज्ञानिक था। उन्होंने अपने ग्रंथ 'माध्यमिक सूत्र' में सापेक्षता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

वसुमित्र

- वे चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष थे। उन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ 'महाविभाष्य शास्त्र' की रचना की, जो बौद्ध जातकों पर टीका है। इसे बौद्ध धर्म का 'विश्वकोश' कहा जाता है।

चरक

- वे कुषाण राज्य के कनिष्क प्रथम के राजवैद्य थे। इनके द्वारा रचित 'चरक संहिता' एक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ है। इसमें रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चाँदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- 'कनिष्क' कला एवं संस्कृति का महान संरक्षक था। उसके समय में मूर्तिकला की गांधार एवं मथुरा शैली का जन्म हुआ। इसके दरबार में पार्श्व, अश्वघोष, वसुमित्र तथा नागार्जुन जैसे विद्वान और चरक जैसे चिकित्सक विद्यमान थे।

38. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिये:

सूची I	सूची II
A. नाट्यशास्त्र	1. अश्वघोष
B. सौंदरानंद	2. नागसेन
C. मिलिंदपन्हो	3. भास
D. उरुभंग	4. भरत मुनि

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

- (a) A-3, B-1, C-2, D-4
(b) A-3, B-2, C-1, D-4
(c) A-4, B-1, C-2, D-3
(d) A-4, B-2, C-1, D-3

38. उत्तर -(c)

मौर्योत्तर कालीन साहित्य

- गाथासप्तशती - हाल
- कामसूत्र - वात्स्यायन
- महाभाष्य - पतंजलि
- नाट्यशास्त्र - भरत मुनि
- चरक संहिता - चरक
- स्वप्नवासवदत्ता - भास
- सौंदरानंद, बुद्धचरित - अश्वघोष
- चारुदत्ता - भास
- मिलिंदपन्हो - नागसेन
- उरुभंग - भास

अतिरिक्त ज्ञान:

मौर्योत्तर कालीन अभिलेख

- अयोध्या अभिलेख - धनदेव
- बेसनगर अभिलेख - हेलियोडोरस
- शिनकोट अभिलेख - मिनांडर
- नानाघाट अभिलेख - नायनिका(नागनिका)
- पंजतर अभिलेख - कुषाण

39. 'गंधार मूर्ति कला' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह शैली बाह्य संस्कृतियों से प्रभावित नहीं थी।
2. यह आदर्शवादी शैली है।
3. इस कला को कुषाण शासकों का संरक्षण मिला था।
4. इसे भारतीय-यूनानी कला के रूप में भी जाना जाता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सत्य हैं?

- (a) तीन
- (b) एक
- (c) चार
- (d) दो

39. उत्तर -(d)

गंधार मूर्ति कला

- इस कला पर यूनानी या हेलेनिस्टिक मूर्ति कला का अत्यधिक प्रभाव है, अतः इसे भारतीय-यूनानी कला के रूप में भी जाना जाता है।
- प्रारंभिक गंधार शैली में नीले-धूसर बलुआ प्रस्तर का प्रयोग किया जाता था, जबकि बाद की अवधि मिट्टी और प्लास्टर उपयोग में लाई जाती थी। यह शैली मुख्य रूप से बौद्ध चित्रकला, ग्रीको रोमन देवताओं के मंदिरों से प्रभावित थी। यह यथार्थवादी शैली है।
- इस कला को कुषाण शासकों का संरक्षण मिला था। यह कला शैली आधुनिक कंधार क्षेत्र और उत्तर पश्चिम सीमांत में विकसित हुई थी।

अतिरिक्त ज्ञान:

मथुरा मूर्ति कला

- यह शैली बाह्य संस्कृतियों से प्रभावित नहीं थी और स्वदेशी शैली के रूप से विकसित हुई। इस शैली की मूर्तियों को चित्तीदार लाल बलुआ प्रस्तर का उपयोग करके बनाया गया है।
- यह आदर्शवादी शैली है। इस कला को भी कुषाण शासकों का संरक्षण मिला था। यह शैली मथुरा, सोंख और कंकालीटीला में और आसपास के क्षेत्रों में विकसित हुई थी।
- मथुरा मूर्ति कला शैली पर तीनों धर्मों का प्रभाव था यानी हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्तियां इस शैली में बनाई गई थी।

40. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'यौधेय' व्यास नदी के पार भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रान्त में निवास करने वाली प्राचीन जाति थी।
2. यौधेय सिक्कों पर 'कार्तिकेय देवता' का अंकन मिलता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 2
- (b) 1 और 2 दोनों
- (c) न तो 1, न ही 2
- (d) केवल 1

40. उत्तर -(b)

- 'यौधेय' व्यास नदी के पार भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रान्त में निवास करने वाली प्राचीन जाति थी।
- यह एक युद्ध करने वाली जाति थी, जिसे 'पाणिनी' ने आयुधजीवी के रूप में उल्लिखित किया है।
- इनके सिक्कों पर एक ओर 'यौधेय गणस्य जय' एवं दूसरी ओर 'कार्तिकेय देवता' का अंकन मिलता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

- मौर्योत्तर काल में ही शैव धर्म के अन्तर्गत 'पाशुपत संप्रदाय' का विकास हुआ, जिसके प्रवर्तक 'लकुलिश' को माना जाता है।
- इस समय व्यापार मुख्यतः अरब सागर के तटवर्ती बंदरगाहों पर होता था। इस काल में बारबेरिकस (सिंधु के मुहाने पर), अरिकामेडु (पूर्वी तट पर), बेरीगाजा या भड़ौच (पश्चिमी तट पर) आदि महत्वपूर्ण बंदरगाह थे।